

हमसे है प्रदूषण

मित्रों, चारों तरफ बढ़ता हुआ प्रदूषण एक मुसीबत है । चाहे वह वायु प्रदूषण हो, चाहे जल प्रदूषण हो, या फिर ध्वनि प्रदूषण । मृदा प्रदूषण को भी मत भूलियेगा क्योंकि ये भी एक प्रकार का प्रदूषण होता है । हालांकि इन सब से बड़ा और सभी प्रदूषणों की जड़, जो सबसे बड़ा प्रदूषण है उस पर किसी की निगाह अभी तक नहीं गई है । जब निगाह ही नहीं गई है तो उसको प्रदूषण भी नहीं मानेंगे । फिर उस प्रदूषण को हटाना, खत्म करना किसी के बस की बात भी नहीं है । इस सबसे बड़े प्रदूषण को तो वही हटा सकता है जिसने इस प्रदूषण को फैलाया है । आप लोग सोच रहे होंगे कि ये सबसे बड़ा प्रदूषण क्या बला है जिस पर अब तक हमारी नजर ही नहीं पड़ी । मित्रों, वह सबसे प्रदूषण, सभी प्रदूषणों का बाप, और सारे प्रदूषण जिसकी उंगली पकड़ कर चलना सीखते हैं, वह है इंसान, मानव, ह्यूमन बींग, सबसे विवेकशील प्राणी, सभी प्रकार के प्रदूषणों की जड़ यानि की हम । हम से मतलब आप लोग सिर्फ कृष्ण मोहन मत लगा लीजियेगा । क्योंकि अगर आप ये सोच रहे हैं कि कृष्ण मोहन को हटाने भर से सभी प्रदूषणों से निजात मिल जायेगी तो आप गलत सोच रहे हैं । क्योंकि ये बिचारा कृष्ण मोहन सिर्फ ध्वनि प्रदूषण और विचारों के प्रदूषण के सिवाये और दूसरे प्रदूषणों को नहीं फैलाता है । धूम्रपान ये करता नहीं कि हर तरफ कार्बन मोनोआक्साइड का फैलाव करे और पान भी ये नहीं खाता कि जहाँ देखो तहाँ ये चित्रकारी करता फिरे । ध्वनि प्रदूषण भी तब फैलाता है जब उसे आकाशवाणी में विनोद वार्ता के लिये बुलाया जाता है । इस लिये ये आदमी उतना प्रदूषण नहीं फैलाता जितना कि दूसरे आदमी फैलाते हैं । हम का मतलब है, हम सभी, इस पृथ्वी नामक ग्रह पर निवास करने वाले साढ़े छः अरब इंसान । प्रकृति के बनाये हुये सबसे विवेकशील प्राणी, जिसने अपने विवके से दूसरे जीव जंतुओं का तो जीना हराम कर ही दिया है और प्रकृति की भी नाक में दम कर रखा है । कहाँ कहाँ नहीं हम ने गंदगी फैलाई है । चाहे वह माउंट एवरेस्ट हो या फिर प्रशांत महासागर । चांद पर भी हो आये हैं तो जाहिर है वहाँ भी कुछ न कुछ गंदगी तो फैलाई ही होगी ही । अगर गंदगी नहीं फैलायेंगे तो फिर इंसान कैसे । जिसको कहते हैं पर्यावरण

उसका हमने सत्यानाश बल भर किया है । चारों तरफ एक महान प्रदूषण फैला हुआ है यानि कि इंसान और इसके द्वारा फैलायी हुयी गंदगी । धरती माता अपने इस लाल की करतूत देख कर सोचती होंगी कि तेरी वजह से आज न जाने कितने जीव, पक्षी और वनस्पतियाँ या तो खत्म हो चुके हैं या फिर लुप्त होने के कगार पर हैं । तू इस कोख से जन्म न लेता तो ही ठीक था । ये दुनिया तेरे बिना ज्यादा सुंदर और शांत होती ।

तो मित्रों ये तो बात हो गई जितने भी प्रकार के प्रदूषण होते हैं उन सबके पिताजी की, यानि की इंसान की । अब आईये उन प्रदूषणों पर निगाह दौड़ाते हैं जो कि इसके द्वारा पैदा किये गये हैं । सबसे पहले लेते हैं वायु प्रदूषण को । वायु प्रदूषण वह प्रदूषण होता है जो कि वायु में फैलाया जाता है । जिसकी वजह से वायुमंडल दूषित होता है । हाँ हाँ भाईया, पेट में वायु विकार के कारण कुछ मानव गर्जना के साथ थोड़ी मात्रा में गैस भी बाहर निकालते हैं लेकिन उतनी गैस से वायु प्रदूषण नहीं फैलता है । फिर वह ज़हरीली भी नहीं होती है। वायु प्रदूषण फैलता है बड़े पैमाने पर ज़हरीली गैसों के वायुमंडल में फैलने पर । जैसे कि बड़े बड़े कारखानों की चिमनियों से निकलने वाला काला धुआं वायु प्रदूषण फैलाता है । जनरेटर्स और बढ़ती हुयी वाहनों की संख्या भी वायु प्रदूषण को फैलाती है । इस वायु प्रदूषण के कारण ओजोन परत का क्षरण होता है और ग्रीन हाउस एफ़ैक्ट की भी समस्या उत्पन्न होती है । मेरी साईकिल से किसी प्रकार का वायु प्रदूषण नहीं फैलता और नहीं मैं धूम्रपान का शौकीन हूँ ।

अब बात करते हैं जल प्रदूषण की । जल ही जीवन है । एक दिन भी अगर बंबे में पानी न आये तो तिवारी जी के हैंडपंप पर पहले बाल्टी लगाने के लिये वो किच किच होती है कि कई बार दिल करता है कि आज पुलिस बुला ही ली जाये । एक बार तो मैं तिवारी जी के हैंड पंप पर शाम के वक्त लोटा बाल्टी लिये दिन भर की थकान उतारने के लिये नहा रहा था, क्यों कि 36 घंटे हो चुके थे नल से पानी टपके । अभी दो ही लोटा पानी सिर पर डाला था कि रोजी के पापा तमतमाते हुये आ पहुंचे । उन्होंने रौद्ररूप धारण कर के बताया कि कक्षा 7 में पढ़ने वाली उनकी बेटी रोजी अब युवा हो गई है और अब मैं अपने शरीर का प्रदर्शन आइंदा इस तरह सार्वजनिक तरीके से इस हैंडपंप पर नहीं किया करूं क्योंकि इससे उनकी युवा हो रही बिटिया के मन पर बुरा

असर पड़ेगा और ये मेरे शारीरिक स्वास्थ्य के लिये भी हितकर नहीं होगा । जल ही जीवन है और इसके कारण मेरा जीवन उस शाम संकट में पड़ा था । पानी हमारे लिये उतना ही जरूरी है जितनी की हवा । लेकिन हम अपने विवेक से दोनों का ही सत्यानाश करने पर तुले हुये हैं ।

आइये अब चर्चा करते है ध्वनि प्रदूषण के बारे में । ध्वनि प्रदूषण के अंतर्गत आता है विभिन्न वाहनों से पैदा होने वाला शोर, आतिशबाजी का शोर, चुनाव प्रचारो ओर धार्मिक प्रचारों का शोर, दशहरा होली के दिन बजने वाला कान फाड़ू संगीत या आज कल शादी ब्याह में चला डी जे का नया शौक । अभी कुछ ही दिन हुये मैं एक सज्जन की शादी में गया था । उनकी बरात जिस गेस्ट हाउस में गई उस गेस्ट हाउस के ग्राउंड फ्लोर में बने एक मात्र हाल में खाने का इंतजाम था, बारातियों के बैठने का और युवाओं के लिये डी जे का भी इंतजाम था । उस 30 बाई 60 फिट के हाल में उन बड़े बड़े स्पीकरों ने वो कहर ढाया कि आधे से अधिक बाराती तो बिना खाना खाये ही भाग खड़े हुये । मैं ठहरा पंडित आदमी । चार काचौड़ियों के लिये जान पर खेल गया । आखिर व्यौहारी के 51 रु. भी तो वसूलने थे । दूसरे दिन खबर मिली कि वो बेचारा दूल्हा जो कि दूल्हन के चक्कर में नहीं भाग सका, रात दो बजे उसे भी घबड़ाहट होने लगी थी । दूल्हे मियां दवाई खाने के बाद ही 7 फेरे ले पाये ।

ध्वनि प्रदूषण की वजह से हृदय की धड़न बढ़ना (हांलाकि दिल की धड़कन सुंदर लड़कियों के सामने आ जाने पर भी बढ़ती है), रक्त संचार मे कमी, चिड़चिड़ापन, अत्यधिक मानसिक तनाव व स्थाई बहरापन आदि दिक्कते होती हैं ।

तो मित्रों कुल मिलाकर सारे प्रदूषणों की जड़ है इंसान । जाहिर है हम अपनी परेशानी खुद है । बढ़ती हुयी जनसंख्या, न सिर्फ पर्यावरण को प्रदूषित करती है बल्कि बेरोजगारी, और अपराध को भी बढ़ावा देती है । देश की अर्थव्यवस्था और कानून व्यवस्था की ऐसी तैसी होती है वो अलग । आज हमारा देश विकासशील देश है तो इसके जिम्मेदार हम हैं क्योंकि हम आज भी अपनी आबादी पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे हैं। जाहिर है ज्यादा आबादी यानि कि ज्यादा प्रदूषण । ज्यादा दिक्कतें ।